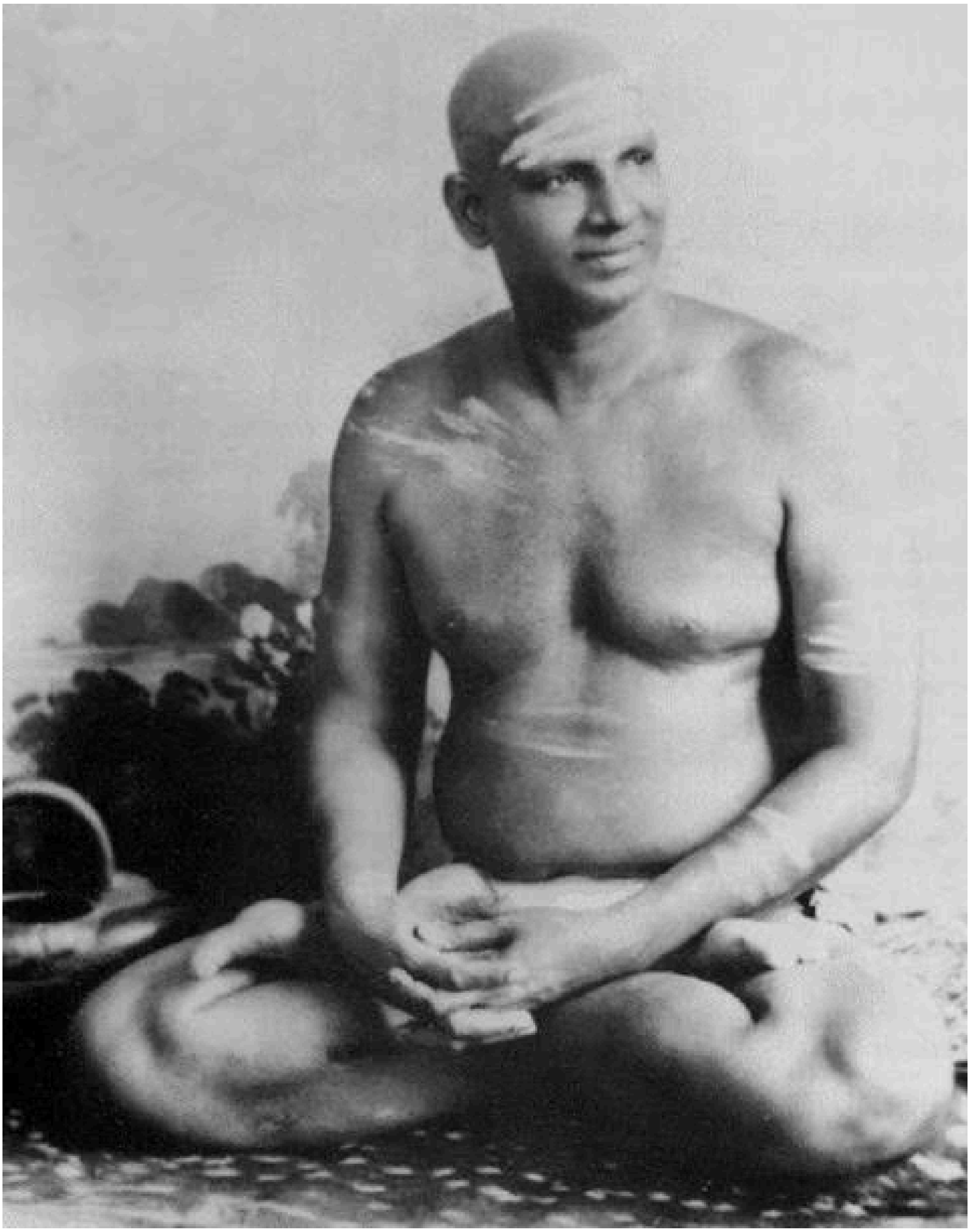
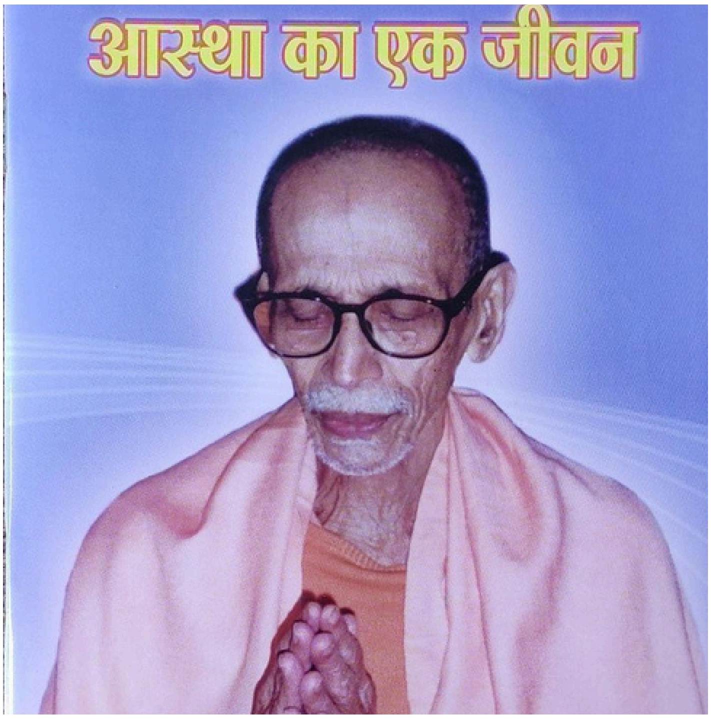




त्याग

शरणागतत और आस्था का एक जीवन

स्वामी तिदानन्द

सहीरूपान्तरण
मेधासिदेव

प्रकाशक
द तिवाइन लाइफ सोसायटी
पत्रालय : तशवानन्दनगर-२४९ १९२ तजला :
तटहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड (तहमालय), भारत
www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम तहन्दीसंस्करण : २००४
तितीय तहन्दीसंस्करण : २०१६
(५००प्रततयाँ)

HC54

Price:25/-

'द तिवाइन लाइफ सोसायटी तशवानन्दनगर के तलए
स्वामी पद्मनाभानन्द िारा प्रकातशत तथा उन्हीं के िारा योग वेदान्त
फारेस्ट एकोमी प्रेस पो तशवानन्दनगर २४९ १९२ ,
तजला तटहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड में मुतित।
For online orders and Catalogue visit : disbooks.org

दो शब्द

(संकलनकताा के)

जनवरी २००२ में उडीसा के कटक में तितीय अन्तराष्ट्रीय तदव्य जीवन संघ सम्मेलन सम्पन्न करने के उपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी तिदानन्द जी महाराज तशवानन्द आश्रम (ऋतिकेश) लौटे। परम पूज्य गुरुदेव श्री
स्वामी तशवानन्द जी महाराज के समातध मन्दिर में सदैव की भााँतत उन्होंने पुनः अपने पावन प्रविनों की विाा
प्रारम्भ की।

तनत्य प्रातः नवीन तविय पर प्रविन देना पूज्य स्वामी जी महाराज का स्वभाव रहा है; तकन्तु इस बार स्वामी जी महाराज ने मध्यकालीन युग के महान् महाराष्ट्री (मराठी) सन्तों ंके जीवन तथा उपदेशों ंपर आधाररत अपनी प्रविन-श्रंरखला प्रस्तुत की। मराठा सम्राट् तशवाजी के गुरु वीतराग संन्यासी एवं सन्त, समथा स्वामी रामदास की पाकेट बुक 'मनो श्लोक' में से एक-एक श्लोक की व्याख्या स्वामी जी महाराज तनत्य करने लगे। ये श्लोक मन को सम्बोतधत थे।"

ये उपदेश इतने पे्ररणाप्रद थे तक हमने उद्धरणों ंका अतभलेखन प्रारम्भ कर तदया और तमत्रों ंके साथ िािा करने लगे। एक तदन एक सहयोगी साधक ने संन्यास की ििाा करते हुए स्वीकार तकया तक वह वास्तव में संन्यास (पररत्याग) के तविय में कुछ नहीं ंजानता। कुछ तविार कर हमने कहा- "तकन्तु, इन तदनों ंप्रात: स्वामी जी महाराज इसी तविय पर ही तो 'बोल रहे हैं। अन्ततोगत्वा, इसका अतभप्राय है-समपाण और आस्था का जीवन। हम तुम्हें उद्धरणों ंका संग्रह पठनाथा देंगे।" वे उद्धरण इतने बुन्दद्धगम्य तसद्ध हुए तक तविार आया- "क्ों ंन समय पर तशवरातत्र के तलए एक पूणा संग्रह तैयार तकया जाये।"

कुछ उद्धरण तो मूल पुस्तक में से स्वामी जी महाराज की व्याख्या हैं, कुछ पररियात्मक हैं और अन्य उनके अपने उपदेश हैं। "Loving Adorations to Gurudev" तथा "Worshipful Homage to the Supreme" में से भी कततपय प्रोज्ज्वल लेखांश हमने इस पुस्तक में तलये हैं, तजन पुस्तकों ंसे स्वामी जी महाराज अपना दैतनक प्रविन प्रारम्भ करते थे। आशा है, आप भी समान रूप से इन लेखांशों ंसे युक्त इस पुन्दस्तका, जो तक"Renunciation a Life of Surrender and Trust” का ‘सही रूपान्तरण' है, से सहायता और पे्ररणा प्राप्त करेंगे।

१मिाा २००२

विषय-सूची

१. सादर बन्दन

उस अतिनं्त्यं असीम परम तदव्य वैतिक सत्ता को सादर वन्दन जो कोतट-कोतट, अरबों–ंखरबों ंब्रह्माण्डों ंकी सरतष्ट्, न्दस्थतत और लय का मूल कारण है। तवशालता के अगाध सागर में इनकी अतभव्यन्दक्त का आभास सवाव्यापक तदव्य ंतिना को नहीं ंहोता। ऐसी उस प्रभु की सवाातततररक्तता (Transcendence) है, तवशालता है, कल्पनातीत आश्चयाजनक असीमता है।

वाणी िारा तजसे बताने का प्रयास तकया जाता है, मात्र उसका श्रवण करके उसे समझना और आिार में लाना कतठन है। इसका वास्ततवक तनतहताथा ग्रहण करना सरल नहीं ंहै। इस पर सतत एकाग्रतापूवाक ध्यान के िारा ही व्यन्दक्त उस तवस्मयकारक असीम तत्त्व के आभ्यन्तर स्वरूप का थोडा-सा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मनन करो, ध्यान करो, मनन करो, ध्यान करो, मनन करो, ध्यान करो-कोई तविार उतदत हो सकता है। मानवीय मन्दस्तष्क की योग्यता, भिाा का तवस्तार और शब्द- ज्ञान की अपेक्षा वह भी अपेक्षाकरत पूवा-तैयारी (योजना) का रूप ही होगा। सम्भव है कोई झलक तमल जाये, थोडा ज्ञान हो जाये। सावधानीपूवाक सतत अभ्यास के िारा अपनी भिाा की तनतान्त सीमा-पयान्त जहाँ हम तविारों ंको समझने की योग्यता रखते हों,ं सम्भव है कुछ सीमा तक हम कुछ ग्रहण कर सकें। अन्यथा मूलरूपेण ससीम जीवात्मा असीम परमात्मा को जानने में असमथा है। अशित, शित सत्ता को कैसे जान सकती है? अनेक तमल कर उस एक का साक्षात्कार नहीं ंकर करते।

उस अपररमेय अनन्त अिैत परमेिर के तलए तो अनायास ही समस्त ज्ञान सम्भव है। समू्पूणा समतष्ट् को वह परमेिर एक बार में एक ही दृतष्ट्पात में जान सकता है; क्ोंतक वह तनत्य है, शित है, उसके तलए कुछ भी अजे्ञेय नहीं ंहै।

ॐ ॐ ॐ

समस्त ब्रह्माण्ड में व्याप्त उस अिैत परम देव को सादर वन्दन जो सब धमों में वतणात अपने तवतभन्न स्वरूपों ंका मूल स्रोत है। आराधन उस अतिन्त्य, सवोच्च सत्य सत्ता का, जो प्रितलत धमों में तकसी भी प्रकार की बोधगम्य तविारधारा से परे है। परमात्मा ही सरतष्ट्, न्दस्थतत और प्रलय कताा है, तहन्दुओं ंकी इस तविारधारा से वह अगम्य है। यहूतदयों ंके जेहोवा जोरोन्दस्टरयन के आहुर माज़दा, ताओइस्ट के ताओ, स्वगा में सवाशन्दक्तमान् तपता- ईसामसीह ने तजसकी प्राथाना की थी और इस्लाम धमा के प्रवताक मोहम्मद ने तजसे अल्लाह कहके पुकारा, इन सबसे भी वह अतीत है। पुनः-पुनः वन्दन उस तदव्य देव को जो तकसी भी धमा की तकसी भी बोधगम्य तविारधारा से परे है।

ॐ ॐ ॐ

सादर वन्दन उस गुरुओं ंके गुरु, अनातद अनन्त गुरु, ज्ञानस्वरूप परम देव परमात्मा को! ज्ञान के सागर, अनन्त ज्ञान के सागर, रहस्यात्मक ज्ञान के सागर उस प्रभु से सरतष्ट् के आतद काल से सब गुरुओं ंने ज्ञान प्राप्त तकया। उसका प्रकाश प्राप्त कर, वे भूलोक के अग्रणी दूत बन गये। उसकी अहेतुकी करपा आप सब पर बनी रहे!

ॐ ॐ ॐ

समस्त सरतष्ट्-कोतट-कोतट ब्रह्माण्ड के पालन कताा, सबकी इच्छाओं ंकी पूतता के अन्त्य कताा शित परम भूमा को सादर वन्दन ! अनेकानेक जीवों ंके अन्दस्तत्व को बहुलता प्रदान करने वाले उस परमात्मा को सादर वन्दन ! कल्याणकारी प्रभु सब प्रातणयों ंऔर मनुष्ों ंका महान् पालन कताा है।

एक सचे्चे भक्त के तलए जो पूणा रूप से परमेिर को समतपात है, तनष्ठावान् है, आस्थावान् है और तकसी प्रकार कीगोपनीयता नहीं ंरखता, वह सवाज्ञ प्रभु सब-कुछ कर सकता है! ऐसी तदव्य सत्ता को हमारा प्रणाम, वन्दन, आराधन !

प्रते्येक सूयोदय तथा सूयाास्त के साथ काल तीव्र गतत के तनकला जा रहा है। प्रते्येक क्षण व्यतीत होता जा रहा है। अतः सभी हिोल्लास अनुतित हैं। अपने-आपसे पूछें, 'एक विा व्यतीत हो गया, मैंने क्ा तकया ? दुलाभ मानव-जन्म को प्राप्त कर मैं क्ा कर रहा हूँ?' सागर की तदशा में प्रवातहत होना सररता का स्वधमा है, वैसे ही अपने मूल स्रोत से तमलना जीव का स्वधमा है। स्वगरह को लौटना ही जीवात्मा का परम कताव्य है।

-स्वामी तिदानन्द

२. पररत्यागका पररणाम

धन्य है भगवान् का वह सेवक तजसका हृदय प्रेम से भरपूर है और साथ ही जो अनासक्त भी है। उसका प्रेम तकसी व्यन्दक्त अथवा वसु्तु-तवशेष के तलए नहीं,ं प्रतु्युत् सावाभौतमक है। प्रेम सावाभौतमक कैसे बना? साधना िारा तवराग, तववेक और अनासन्दक्त जैसे गुणों ंका तवकास करने से ही प्रेम सावाभौतमक बना। उसका प्रेम सबको अपनी ओर आकतषात करता है; तकनु्तु वह स्वयं वैराग्य िारा अनासक्त होने के कारण उसमें नहीं ंफाँसता।

ॐ ॐ ॐ

धन्य है वह मनुष् जो तदव्य नाम का अभ्यास करके आध्यान्दत्मकता की सवोच्च पररन्दस्थतत को प्राप्त कर लेता है और अपने िारों ंओर बने हुए इन्द्रिय-तवषयों ंके आकषाक वू्यह का पररचे्छेदन कर के संसार में वैराग्य और तववेक की अवस्था में न्दस्थत रहता है। उनके मध्य में रह कर भी वह पूणा रूप से इतना अन्तमुाख और वैराग्य में प्रततततष्ठत रहता है तक उन तवषयों ंका उस पर कोई प्रभाव नहीं ंपडता। यहााँ होते हुए भी वह यहााँ नहीं ंहै। सभी ऐन्द्रिक तवषय वहााँ होते हुए भी नहीं ंहैं।

ॐ ॐ ॐ

महान् लोग कभी-कभी अन्य साधकों ंको अपनी ओर आकतषात करने के तलए समाज भक्त होने का अतभनय करते हैं। दूसरों ंको ज्ञान-मागा पर लाने के तलए वे उनकी तमत्रता और प्रेम पाना िाहते हैं। क्ोंतक यतद वे केवल तपस्वी-ज्ञानी बनके रहते हैं, तो भक्त यह सोि कर उनके समीप नहीं ंआयेंगे -"नहीं,ं नहीं,ं यह तो शुष्क ज्ञानी हैं। इसमें माधुया नहीं ंहै। ऐसे महात्मा को हम क्ा करें?"

इस प्रकार वे उसकी तमत्रता से वंतित रह जायेंगे और ज्ञानी उनके भीतर ज्ञान जागरत नहीं ंकर सकेगा।

अतः ज्ञानी अपने ज्ञान को गुप्त रखते हुए भक्त बन जाता है। उनके साथ रह कर वह उनमें साधना और ज्ञान-प्रान्दप्त के गुणों ंके प्रतत प्रेम का सरजन करके उन्ें ज्ञान की सवोच्च अवस्था में पहुाँिाने में सहयोग करता है।

ऐसी महान् आत्माएँ धरा की सफल तवभूततयााँ हैं। स्वज्ञान के कारण वे सदा भगवान् के सातन्नध्य में रहते हैं। क्ोंतक भगवान् वहााँ नहीं ंहै। भगवान् सवात्र है, अतः भगवान् इस समय यहीं ंहै, आपके समक्ष है। आपके मुखातभमुख तवरातजत है।

ॐ ॐ ॐ

धन्य है वह, क्ोंतक वह एक भक्त है, इष्टदेव की आराधना करता है और साथ ही यह ज्ञान भी रखता है तक वास्तव में परमात्मा सवाशन्दक्तमान् पूणा शन्दक्त है, नाम-रूप से रतहत, अिैत, परमोत्करष्ट, अतनवािनीय और अवणानीय है। अतः कभी भी यह नहीं ंसोिना िातहए तक वह परमात्मा रूप धारण करके इष्टदेव के रूप में तनम्न स्तर पर अवतररत होगा अथवा पकड में आ जायेगा। नहीं,ं नहीं,ं पूजा करते समय भी भन्दक्तभाववश वह तकसी

स्परश्य अथवा दृश्य भगवान् के प्रतत अपने भाव समतपात करना ि◌ाहता है, अन्यथा आभ्यन्तर रूप से वह परमात्मा के ज्ञान में पूणातया प्रततततष्ठत है।

उद्बोधन

अपने वास्ततवक आनन्द-तनकेतन की ओर ि◌ लते ि◌ लें। संसार के मरुस्थल में आप बहुत भ्रमण कर ि◌ुके हैं, अब सन्त-रूपी मरुधानों ◌ं में तवश्राम करें। यह तो तप्त बालुका है, तरन्दप्तदायक जल नहीं।◌ं भ्रम का पररत्याग करें। सन्तों ◌ं से ज्ञान की प्रान्दप्त करें। सन्त आपका
उद्धार करेंगे। वे आपको सहायता प्रदान करेंगे। वे आपका मागा-तनदेशन करेंगे और
आपके लक्ष्य तक साथ-साथ ि◌लेंगे। अन्धा व्यन्दक्त तबना तकसी नेत्रधारी की सहायता के ि◌ल नहीं ◌ंसकता। संसारी लोग शित सत्य के प्रतत अन्धे हैं और केवल अज्ञानान्धकार में अपना मागा टटोल रहे हैं। केवल ऋति और मुतन गण ही आपको सहायता प्रदान कर सकते हैं। उनकी तशक्षाओं ◌ंका पालन करें। सदािार का अभ्यास करें। अपने ध्येय को
उच्च बनायें और उतित प्रयत्न करते जायें। - स्वामी तशवानन्द

३.संन्यासका आह्वान

जीवन क्या है, क्षण-भर के तलए तवािर करो। काल की वह अवतध अथवा अंश तजसे हम जन्म के समय सेले कर पावन गंगा, धरती अथवा अति में अतपात तकये जाने पयान्त व्यतीत करते हैं, जीवन कहलाता है। आँग्ल भािा की उन्दक्त है : "झूलू से कन्न तक!" एक अन्य लेखक का कथन है—“गभा से कब्र तक!" यही जीवन है। भारत में, तहन्दू समाज में कहेंगे - "जन्म-स्थान से शवदहनशाला तक की यात्रा जीवन की अवतध है।"

तकनुतु जीवन का यह एक तुलनात्मक (सापेक्ष) दृतष्ट्कोण है तजसमें हम केवल इस परथ्वी ग्रह की सीतमत अतभव्यन्दक्त की बात करते हैं। यहाँ सब-कुछ अतभव्यक्त रूप में है। उसका नाम है, रूप है। वे सीतमत हैं। समय की अवतध में पररबद्ध वे सब निर पदाथा हैं। उनका जन्म, जरा, व्यातध और अन्त में मरतुयु तनतश्चत है। तकनुतु इस पररतमत, सीतमत, व्यक्त दृश्य जगत् से परे एक और आयाम है जो कालातीत, देशातीत, लोकातीत, अबोधगम्य, अतिन्त्य और अतनविानीय है। इस तवस्मयकारी ज्ञानातीत की तुलना में यहाँ का समय तो मात्र एक बूाँद है अथवा शून्य है।

तुम्हें पूरी तरह से इसकी पहिान करनी है। शब्द, स्पशा, रूप, गन्ध आतद तन्मात्राएँ तजन्हें तुम ठोस वास्ततवक समझते हो और इन्हें अत्यन्त महत्त्वपूणा मानने का जो पागलपन करते हो, इससे छुटकारा तभी तमल सकेगा। वे सब तमथ्या हैं। वे असत्य हैं, माया जाल हैं, असत् हैं। ब्रह्मतनष्ठ ऋतियों–मुतनयों ◌ंका ही यह कथन है। वे

अल्पकातलक छाया मात्र हैं, तबना िव्य का दृश्य हैं, मरगमरीतिका हैं, छलावा हैं। हम उनके पीछे भागेंगे तो दलदल में फाँस जायेंगे, किीड में फाँस जायेंगे और प्राणों ंसे हाथ धो बैठेंगे। तो आओ, जीवन की इस छोटी-सी अवतध को स्वप्नवत् संसार की असारता से जागरत करें, तववेक और ज्ञान की प्रान्दप्त िारा इसे ऊपर उठायें और स्वतन्त्र हो जायें, मुक्त हो जायें।

उविष्ठत, जाग्रत, प्राप्य िराविबोधत; उठो, जागो, ज्ञान प्राप्त करो। जीवन की पररभाि जीवन की इस अल्पकातलक अवतध से कहीं ंअतधक है। पालने से समातध तक, गभा से कब्र तक, एक जन्म-स्थान, एक श्मशान, भौततक, मत्या आवरण को तनवरतत्त पाने का स्थान-जीवन तो इससे कहीं ंअतधक है। वास्ततवक जीवन तो आतद और अन्त से अतीत है। वह तनत्य, शिात, अनन्त है।

ॐ ॐ ॐ

उस अनन्त जीवन की ओर ही वतामान जीवन एक यात्रा है। इसका लाभ उठाओ। जीवन की कला सीखो । इसके नकारात्मक पक्ष होते हुए भी यह महत्त्वपूणा है। इसके महत्त्व को हम नहीं ंजानते। यतद सिाे जाये तो आवागमन के िक्र से मुक्त होने और अमरत्व प्राप्त करने के तलए यह जीवन हमें एक स्वतणाम वरदान-रूप में तमला है जो इस धरा की सौभाग्यशाली मनुष्-जातत को ही प्राप्त है, अतः तनतान्त महत्त्वपूणा है। यही तुम्हारा लक्ष्य होना ितहए। हम सब इस लक्ष्य की आकांक्षा करें और धन्य हो जायें!

आप सबसे ऊपर है कल्पवरक्ष राम । समस्त सरतष्ट् और प्रातणयों ंके भाग्य का संिालिन करने वाला वही है। सांसाररक लोगों ंऔर साधकों ंकी मूखाता तो देखो। कल्पवरक्ष के निी बैठे वे सदा तिन्दन्तत, दु:खी, उतुसुक और तनावयुक्त रहते हैं मानो आसुरी, दु:खद नकारात्मक शन्दक्त से उन्ें कुछ अतधक प्राप्त होना हो। अपने दु:खों ंको वे स्वयं तनमन्त्रण दे रहे हैं, स्वयं ही उनका सरजन कर रहे हैं।

अपने अचे्छे तदनों ंमें उन्ोंनें वैराग्य को अनुभव तकया; तकनु्त अब छोड तदया, क्ोंतंक अन्दन्तम लक्ष्य के तलए उन्ोंनें वैराग्य का अभ्यास नहीं ंतकया। जैसे ही उन्ें लगा तक वैराग्य का अथा तो सवास्व-त्याग है, तो वे समझौता न कर सके और वैराग्य को पीछे छोड कर इच्छा में फाँस गये-"इच्छा से मैं सन्तोि प्राप्त कर सकता हूँ। इच्छा से ही में प्रसन्न रह सकता हूँ। इच्छा से ही मैं सुखी रह सकता हूँ।" ऐसे अयुक्त और अतववेकशील तविारों ं से ऐसे लोग तघर जाते हैं और दु:खी होते हैं। तकतनी बडी मूढ़ता है!

ब्रह्म के साथ एक होने की अिैत अवस्था में सतत सुख, शान्दन्त और आनन्द की विाा होती है। उस एकत्व की अवस्था को प्राप्त करके आनन्दन्दत होने की अपेक्षा वे िैतभाव की ओर भागते हैं। वे रोते हैं- "आनन्दस्वरूप भगवान् तो परथक् हैं, मैं तो शोकपूणा व्यतष्ट् आत्मा हूँ।" वे असत् िैत का सरजन करते हैं, उसी में िूब जाते हैं और तबना कारण के रोना-धोना करते हैं। इस धरा पर मनुष् की इस मूखाता से बडी मूखाता भी क्ा हो सकती है? आश्चया ! दु:ख है!

हे मनुष्, ऐसी महान् भूल मत करना। रोको इसे। इससे बाहर आओ।

ॐ ॐ ॐ

समथा स्वामी रामदास कहते हैं- "हे मानव, इस लोक में भगवान् का वही सेवक सौभाग्यशाली है जो बुन्दद्धमत्तापूवाक काया करता है। वह यह नहीं ंसोिता तक शास्त्र क्ा कहते हैं, परम्परा क्ा है अथवा रीततररवाज क्ा हैं। यतद ये सब श्रेष्ठ न हों,ं तो वह कहेगा- 'नहीं,ं नहीं,ं मैं तो श्रेष्ठ का ियन करूँगा।' शास्त्रों ंका कथन है तक

ब्रह्मिया, गरहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम के उपरान्त संन्यास ले कर एकान्तवास करना िातहए। परन्तु बुन्दद्धमान् और धन्य वही है, जो इस क्रम की प्रतीक्षा न करके कहता है तक वरद्धावस्था तक क्ों ंटाला जाये ? समय बीत रहा है। भगवान् जाने, तब मैं कहाँ होऊँगा। तो युवावस्था में शन्दक्त रहते ही क्ों ंन संन्यास ले कर एकान्तवास करूँ ? मन तनमाल है, मेरी सब शन्दक्तयाँ मेरे साथ हैं। मुझे भगवत्साक्षात्कार के तलए प्रयास करना िातहए। वरद्धावस्था में यह प्रयास करने से क्ा लाभ, जब शरीर और मन की सब शन्दक्तयाँ क्षीण हो जाती हैं, तिन्ताएँ घेर लेती हैं, शरीर थक िुका होता है और मन तवतक्षप्त हो जाता है।"

ॐ ॐ ॐ

आन्तररक दोि, अपतवत्रताएँ और अभाव के प्रतत सिेत हो जाने पर मनुष् अवसाद की अवस्था में आ कर कहता है- "मैं आध्यान्दत्मक जीवन के योग्य नहीं ंहूँ। अच्छा यही होगा तक इश्विर्तु को पकडने की लालसा त्याग कर कोई तनम्न पदाथा की कामना करूँ।" इस प्रकार अपनी अयोग्यता की जागरतत के कारण वह अपने आदशों से तगर कर मनुष्-जीवन के इस अमूल्य स्वतणाम अवसर को खो बैठता है।

स्वामी रामदास कहते हैं-"आसुरी प्रवरतत्तयों ंके कारण तुम्हारा मन दूतित और अपतवत्र क्ों ंन हो जाये, पर तुम आध्यान्दत्मक जीवन और नाम-जाप को मत त्यागो। अपने दोि, पाप और अयोग्यता के भार से आप स्वयं दब जायेंगे। इन सबका ध्यान रखते हुए तदव्य नाम की शन्दक्तशाली प्रकरतत के प्रतत तविास और श्रद्धा से लगे रहो; क्ोंतंक इसी प्रकरतत के कारण तदव्य नाम में पावन करने की शन्दक्त है। वह तुम्हें पतवत्र करके आध्यान्दत्मक जीवन के योग्य बना कर सवोच्च अनुभूतत भगवत्साक्षात्कार एवं मोक्ष से करतज्ञ कर सकता है। वह तुम्हारे तलए सब-कुछ करेगा। तुम्हारे सब अवगुणों ंको दूर करके, सद्गुण प्रदान करके, तुम्हें तुम्हारे लक्ष्य के प्रतत, भगवान् के प्रतत उन्मुख करेगा। अतः तिन्ता मत करो। आध्यान्दत्मक जीवन अपनाने में संकोि मत करो। िरो मत। शंका मत करो।"

ॐ ॐ ॐ

ईसा मसीह ने कहा था- "मरतकों ंको अपने मरतक स्वयं दफनाने दो। उठो, मेरा अनुसरण करो।" जब तक रामकरष्ण परमहंस ने अपने एक भक्त से कहा- "समय आ गया है, सवास्व त्याग कर अध्यात्म-पथ का अनुसरण करो!" युवा भक्त ने उत्तर तदया- "मैं तैयार हूँ, मैं तैयार हूँ। केवल एक काया है, उसे करके जाऊँगा।" रामकरष्ण हाँस तदये और बोले- "तुम इसे कभी नहीं ंकर पाओगे; क्ोंतंक तुम उस एक काया को करने जाओगे, उसे करते हुए दूसरा काया समक्ष आ खडा होगा और तुम्हें (आत्म) तनयन्त्रण की प्रतीक्षा करने का बहाना तमल जायेगा।" मनुष् के पास भौततक पदाथों के संकलन की इच्छा का कोई अन्त नहीं ंहै। अनन्त-एक के बाद एक! कहीं ंतो तुम्हें तनणाय लेना ही होगा। तवमुख हो जाओ, दृढ़ तनश्चय करो और आगे पग बढ़ाओ। तभी तुम तनरपेक्षता से पतवत्रता और भौततकता से आध्यान्दत्मकता की ओर आओगे।

इन आदेशों ंका पालन करने वाले तुम धन्य हो। तुमने ऐसा तकया, इसका अथा है तक पूज्य स्वामी तशवानन्द जी महाराज और भगवान् की करपा आप पर है। इसतलए साहस रखो और दृढ़ संकल्प से लक्ष्य प्रान्दप्त पयान्त आगे बढ़ते रहो। दायें, बायें मत देखो। बाधाएँ आयेंगी; पर पीछे नहीं ंमुडना। बढ़ते िलो, आगे भगवत्प्रान्दप्त की ओर बढ़ते िलो !

ॐ ॐ ॐ

तकतना तवशाल कदम बन जाता है, जब उस तदव्यता का आमन्त्रण आता है और अनायास ही भीतर से सवास्व त्याग की प्रेेरणा होती है। यह काया नाव की उस रस्सी को काटने के समान है, जो घाट पर अच्छी तरह बाँधी हुई है और उसमें सवार हो कर स्वयं को तवशाल सागर में इधर-उधर, तबना पाल-नाव के, तबना पतवार के बहने की आज्ञा दी जाती है। "आओ, उठो, मेरा अनुसरण करो। अपनी सुरक्षा मुझ पर छोड दो, मैं तुम्हारा ध्यान रखूँूगा।"

यह परमेिर की आवाज है, जो कह रहे हैं- "मेरे प्यारे, तुमने मुझे अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है, तुमने मेरे कारण सवास्व त्याग करने का संकल्प कर तलया है, तुम क्ा सोिते हो तुम्हारे इतने महान् त्याग के प्रतत मैं पूणातया असावधान रहूँगा? तुम्हारे इस प्रयास में जब मैं इतना आतलप्त हूँ तुम क्ा समझते हो मैं समझ नहीं ं पाऊँगा तक तुमने मेरे तलए क्ा-क्ा तकया है? ि रो मत। **सिवधर्ावन्पररत्यज्य र्ारे्कं शरणं व्रज। अहं त्वा सिवपापेभ्यो र्ोक्षवयष्यावर् र्ा शुचः** (अन्य सब कायों को छोड कर मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हें सब पापों ंसे मुक्त कर दूँगा, शोक मत करो)। तिन्ता मत करो, शोक मत करो, सब भार मुझे सौंपं दो।" यह एक दृढ़ विन है।

सम्राट् तशवाजी के गुरु समथा रामदास स्वामी हमें सम्बोतधत करते हैं- “ओ मेरे प्यारे, मेरे तमत्र, अनावश्यक रूप से तुम भयभीत क्ों ंहो? अज्ञात कल का भय तकस तलए? कल मेरा क्ा होगा ? मेरा तनकट अथवा दूर का भतवष् क्ा कहता है? क्ा यह अच्छा होगा अथवा नहीं?ं मेरे तलए कल्याणप्रद होगा अथवा कोई महती तवपतत्त मुझ पर आने वाली है?"

इस प्रकार का भय तकसी अज्ञानी पुरुि को घेर ले, कोई बडी बात नहीं ंहै, स्वाभातवक ही है। तकन्तुतु रामदास कहते है-"यह तकसी भी प्रकार से न्यायसंगत नहीं ंहै। न्यायसंगत इसतलए नहीं ंहै तक जब तुमने श्रीराम के िरणों ंमें आत्म-समपाण कर तदया है और कहा है, 'मैं तुम्हारा हूँ भगवन्', तो सवाशन्दक्तमान् स्वामी ने व्रत ले तलया है तक उसकी शरण में आने वाले को कोई भय नहीं ंरहेगा। वह उसके सब शतुरुओं ंका तवनाश कर देगा। उसके भक्त की ओर उँगली उठाने वाले का भी तवनाश हो जायेगा।

“संसार का कोई भी प्राणी इतना छोटा अथवा महत्त्वहीन नहीं ंहै तक परमेिर का उस पर ध्यान ही न जाये। उसकी समान दृतष्ट् में सभी महत्त्वपूणा हैं, समान हैं, कोई इतना तनम्न नहीं ंहै तक उसकी अवज्ञा हो। तुमने देखा नहीं?ं रावण का वध करने के पश्चात् जब राम के तलए पुष्पक तवमान में बैठ कर लंका से अयोध्या प्रस्थान का समय आता है, तो वे सबको साथ ले कर गये। उन्ोंनें केवल सीता, लक्ष्मण अथवा कुछ अन्य लोगों ंके तलए ही तवमान नहीं ंबुलाया। वे तो सभी वानर, भालू आतद को साथ ले कर कर गये। तकसी को ऊँाि-नीिा उन्ोंनें नहीं ंमाना। ऐसा ही परमेिर का हृदय है, ऐसी उसकी समान दृतष्ट् है। अतः उसी के िरणों ंकी शरण ले कर तनतश्चन्त हो जाओ। तुमने अच्छा तकया है। तुम्हें कोई हातन नहीं ंहो सकती।”

अतः अज्ञात (अपररतित) का भय होना स्वाभातवक है; तकन्तु आध्यान्दत्मक क्षेत्र में, जो एक पररतित क्षेत्र है, तकसी प्रकार का कोई भय नहीं ंहै। दोनों ंहाथों ंमें साहस भर कर जब हमने 'अज्ञात' की ओर प्रवेश कर ही तलया है, तो हम सुरतक्षत हैं; क्ोंतक वह अज्ञात सवासुरक्षादायक, दयालु, सवाशन्दक्तमान्, करपालु, सवासमथा परमात्मा स्वयं ही है। इसकी तुलना में तुम भौततक पदाथों और लोगों ंमें अतधक सुरतक्षत नहीं ंरह सकते, यद्यतप आप ऐसा मान बैठे हों,ं वहााँ तुम सौ गुणा अतधक सुरतक्षत हो; क्ोंतक वहााँ तुम एक मनुष् की नहीं,ं परमेिर की सुरक्षा में सुरतक्षत हो।

हे भारतवातसयो! जागें तथा संसार को धन्य बना दें। भारतवि‍ा की सांस्करततक परम्परा के भाग्यशाली उत्तरातधकाररयो! अपने जीवन को भारत के त्याग तथा सेवा के ज्वलन्त आदशों की दीन्दप्तमान प्रभा बना दें। अपने को हमारे धमा का सजीव मूता रूप बना दें तथा अपने में परम आत्मज्ञान के अनुवती परोपकार के उदात्त तसद्धान्तों ंका आदशा प्रसुतुत करें। भारतवि‍ा की उदात्त संस्करतत आप तथा आपके समिू जीवन में प्रततक्षण और प्रततततदन सजीव रूप से अतभव्यक्त हो। इस भााँतत आपके
िारा भारत ओजस्वी रूप से सजीव, जाग्रत तथा तक्रयाशील बने। आप भारत हैं।

-स्वामी तिदानन्द

४. संन्यास का जीवन

कबीरदास का एक भजन महात्मा गान्धी को बहुत तप्रय था। वह भजन न केवल जगाने वाला और सावधान करने वाला है, प्रतु्युत् एक ितावनी भी है। यह भजन हमारे कताव्य का बोध कराके हमें पे्ररेरत करता है उस परमेिर से तमलने के तलए तजसकी उपेक्षा करनी उतित नहीं ंहै।

"ओ मुसातफर, तुम्हें अपनी मंतजल पर पहुुँिना है। गन्तव्य हो तो तुम ऐसे कैसे बैठ सकते हो अथवा नीदं ले सकते हो। यतद रात-भर के तलए रुके हो, तो प्रातः जब थोडा प्रकाश होने लगे तजसमें तुम अपना हाथ देख सको, तो उस तदन की यात्रा के तलए तैयारी प्रारम्भ कर दो। उठो ! जागो ! भोर हो गयी है, हे मुसातफर, तुम अभी तक सो रहे हो। अरे मूखा, उठ, प्रभु का ध्यान कर। क्षण-क्षण करके जीवन बीता जा रहा है। प्रीतत करने का यह कौन-सा तनयम है तक प्रभु जाग रहा है और तू सो रहा है?"

यह प्रीवत करन की रीवत नहीं,ं प्रभु जागत हैं तू सोित है।
उठ जाग रुसाविर भोर भई अब रैन कहााँ जो सोित है।
जो सोित है सो खोित है जो जागत है सो पाित है।।

ॐ ॐ ॐ

समथा स्वामी रामदास के अनुसार आध्यान्दत्मक साधक के जीवन में जो तथ्य सवोच्च मूल्य और महत्त्व का है, उसकी ओर वे हमारा ध्यान आकरष्ट् करते हैं। वे कहते हैं-"सदािार सवोपरर है। सदािार के समान बहुमूल्य और महत्त्वपूणा और कुछ नहीं।ं तुम्हें सदािारी बनना िातहए। अथाात् तुम्हारा व्यवहार और िररत्र धमा के स्तर का होना िातहए। मन से, विन से, कमा से तुम्हें धमा का पालन करना िातहए।"

इसके महत्त्व का यतद तुम मूल्यांकन न कर सको, तो अपने िारों ंओर दृतष्ट्पात करो और सवातः मानव-समाज को देखो। ध्यान दो, सवात्र, तकस व्यन्दक्त को तकस गुण के कारण दूसरों ंसे सम्मान तमल रहा है। शंका मत करो तक िररत्र सवाातधक मूल्यवान् है। सने्देह त्याग कर पूणा रूप से िररत्रवान् बनने का संकल्प करो।

ॐ ॐ ॐ

गुरुदेव कहा करते थे- "वे कहते हैं ज्ञान ही शन्दक्त है, परनु्त मैं तनतश्चत रूप से घोिणा करता हूँ तक िररत्र शन्दक्त है।" गुरुदेव यह भी कहते थे तक नैततक पूणाता अमरतत्व का आधार है। वे कहते थे- "तुम्हारा जीवन यतद ठोस रूप से धातमाक जीवन नहीं ंहै, धमा पर, नीतत पर, सदािार पर आधाररत नहीं ंहै, तो तुम अमरत्व और भगवत्साक्षात्कार की कल्पना भी नहीं ंकर सकते।"

ॐ ॐ ॐ

तवि-भर के मनुष्ों ंमें तकसी-न-तकसी प्रकार का अन्योन्य आदान-प्रदान िलता रहता है। यही क्रम तुम्हारी आध्यान्दत्मक तपपासा, तजज्ञासा और साधना में पे्ररक प्रकरतत का हो, तो श्लाघ्य है। इससे आध्यान्दत्मक आदशा की ओर संगतठत प्रगतत होगी, अन्यथा तुम्हारा आिरण मानव-समाज में आध्यान्दत्मकता के अनुरूप न होने से तनिेधात्मक बन कर तुम्हारे संघिा में बाधा बन जायेगा। बन्धन और मोक्ष के प्रतत संन्यास का जीवन तववेकपूणा दृतष्ट्कोण रखना ही बुन्दद्धमत्ता है। तववेक, तवविेन, ियन और अस्वीकरण सचे्च साधक के लक्षण हैं।

ॐ ॐ ॐ

इस धरा पर वही मनुष् धन्य है जो कथन के अनुरूप आिरण करता है, तजसकी वाणी और कमा में अनुरूपता है। स्वामी करष्णानन्द जी महाराज सवादा कहते थे- "महान् आत्मा के जो मन में होगा, वही वाणी से बोलेगा और जो मन में है, वाणी से उसका उच्चारण करने पर तदनुरूप कमा करेगा।"

ॐ ॐ ॐ

घोर तवपतत्त में भी मानतसकरूपेण तनिरतापूवाक िटे रहने के तलए उदारहृदय पूज्य श्री स्वामी तशवानन्द जी महाराज ने हम पर धैया, समन्वय और मानतसक सनुतुलन-रूपी गुणों ंकी विाा की। उन्ोंनें हमें आभ्यन्तर सनुतुलन और तविार तथा भाव की न्दस्थरता बनाये रखने के तलए प्रेेररत तकया। श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार यह भी एक योग है।

"सर्त्वं योग उच्यते"-मन का समत्व ही योग है। यह समत्व, अपने व्यन्दक्तगत दृष्टान्त िारा, तशक्षा और उपदेश िारा गुरुदेव ने हमें तदया।

कभी-कभी भगवान् जो आपके समीपतम से भी समीप हैं, िास से भी समीप हैं, ऐसा आभास कराते हैं तक वे तुमसे बहुत दूर हैं, अन्यथा तुम्हारे मन में यह तविार आ सकता है तक यतद वे इतने समीप थे, तो अमुक घटना कैसे घतटत हो सकती थी। भगवान् इसे रोक सकते थे, यतद वे समीप होते। तकन्तु समथा रामदास मन को सम्बोतधत श्लोकों ंमें कहते हैं-"वे तकतना भी दूर प्रतीत हों,ं वे आपके अत्यन्त तनकट हैं।"

तफर वे दूर क्ों ंप्रतीत होते हैं? रामदास कहते हैं-"दया, करुणा के कारण ऐसा आभास होता है। वे हमें और अतधक शन्दक्तशाली, सहनशील-आध्यान्दत्मक रूप से सहनशील बनाना िाहते हैं, तकतनी भी बडी तवपतत्त क्ों ंन आ जाये, हम शान्त भाव से सहन करें और हमारा तविास न टूटे। यह तो केवल परीक्षा है आपकी क्षमता की, आपके साहस की, भगवान् के प्रतत आपके दृढ़ तविास की।"

एक भक्त ने एक बार कहा - "भगवन्, तुम जो कुछ भी कर सकते हो, करो। असाध्य रोगों ंके साथ मेरे पास आओ। मैं अहतनाश कष्ट् में रहूँ। मेरा आवास छीन लो, मेरा पररवार छीन लो, मेरा सवास्व ले लो। मेरे सब तमत्र मेरे शत्रुुओं ंमें बदल दो। धरती का वह टुकडा जहाँ मैं जीतवकोपाजान के तलए कतठन पररश्रम करता हूँ, उसे व्यथा कर दो। तब भी तुम्हारे दयालु, करपालु, कल्याणकारी स्वभाव के प्रतत मेरी अटूट श्रद्धा बनी रहेगी, मैं तवितलत नहीं ंहोऊँगा। तुम्हारे असीम प्रेेम, असीम भिता, सागर समान करुणा के समक्ष, हे भगवन्, आप कुछ भी करो, मुझे तहलाने में (मेरा तविास तोडने में) समथा नहीं ंहोगा।"

भक्त का यही स्वभाव है। अतः रामदास कहते हैं- "दु:खों ंसे भरे इस मत्यालोक में जहााँ दु:ख और मरत्युु अतनवाया हैं, इन घटनाओं ंसे मन को तवितलत न करो। ऐसा नहीं ंहै तक भगवान् तुम्हारे से दूर हो गये हैं। एक छोटे-से परीक्षण िारा तुम्हारा तविास और अतधक बढ़ाने के तलए वे ऐसा करते हैं। भन्दक्त की महत्ता कदातप नष्ट् नहीं ंहो सकती। तवपतत्त का पहाड भी आप पर क्ों ंन टूट पडे, भन्दक्त की शन्दक्त की अन्ततः तवजय होगी। भन्दक्त में तो ऐसा बल है तक यह सब तवपतत्तयों ंका तनराकरण करके आपको शान्दन्त और आनन्द से करताथा करेगी।" इस संसार में वे नर-नारी धन्य हैं जो अपनी सरल, स्पष्ट् और सहज प्रकरतत से दूसरों ंका मन हर लेते हैं। वे सदा सत्य बोलते हैं, झूठ नहीं ंबोलते। दूसरों ंके साथ व्यवहार में अत्यन्त ितुर, धोखा और छलकपट की नीतत नहीं ंअपनाते। बहुत लोग स्वयं को ितुर समझते हैं; क्ोंतक वे तकसी को भी िकमा दे सकते हैं। यह सांसाररक ितुराई और

कपटपूणा होतशयारी आध्यान्दत्मक गुण नहीं ाहै। इससे तुम्हें संसार में आगे बढ़ने का अवसर तो तमलता है; परनुतु परमात्मा उस सरल, तनष्कपट-हृदय व्यन्दक्त से प्रेम करते हैं जो सौभाग्यवश इस प्रकार लोमडी-जैसी िालाकी से, होतशयारी से, धोखाधडी और घुमावदार कूटनीतत से मुक्त है।

ॐ ॐ ॐ

तनवरतत्तनाथ का कथन है-"अपना हृदय उच्चता-मनोग्रन्दि (Superiority Complex) से दूतित मत करो। ऐसा मत सोिो तक तुम श्रेष्ठ हो; क्ोंतक तुम ब्राह्मण हो, क्ोंतक तुम तशतक्षत हो, सुन्दर हो अथवा अच्छे गायक हो अथवा तुम कोई राष्ट्रपतत अथवा मुख्यमन्त्री हो-ऐसी कोई भावना हो, यह तो उपातध मात्र है जो मनुष् का पतन करने का प्रयास करती है।

"तुम उस परमात्मा के पुत्र हो, तदव्य हो; क्ोंतक परमात्मा के अंश होने के कारण तुम्हारी प्रगतत भी वही है जो उस परम पुरुि की है। सागर की लहर सागर के जल से परथक् तो नहीं ाहोती। सूया की तकरण प्रकाश नहीं ा तो और क्ा है! िीनी का एक कण और एक ढेर-दोनों ाशत-प्रततशत मीठे हैं। पूणा हो अथवा अंश-गुण समान होते हैं। अतः तुम भी तदव्य प्रकरतत हो।

"भगवान् सबको समान दृतष्ट् से देखता है। वह महान् से महानतम और नम्र से नम्रतम है। करष्णावतार में भगवान् ने युतधतष्ठर के राजसूय यज्ञ में आने वाले अततततथयों ाके िरण प्रक्षालन तकये। महाभारत के युद्ध में अपने ही तशष् अजुान के सारथी बने। अजुान ने उच्च स्थान ग्रहण तकया और करष्ण ने तनम्न स्थान तलया। गाडीवान का कताव्य तनभा कर भी उन्ोंने यह कभी नहीं ासोिा तक यह काया तनम्न स्तर का था।

"अतः तकसी भी पररन्दस्थतत में अपना महत्त्व बताने या बढ़ाने का भाव मत रखो। सभी समान हैं। वही प्राण-शन्दक्त सब जीवों ामें तवद्यमान है। सब रह रहे हैं, गततशील हैं, देखते हैं, काया करते हैं; क्ोंतक सबके भीतर एक वही तत्त्व तवरातजत है, वह िाहे पौधा हो, पशु हो, पक्षी हो, मछली हो, कुछ भी हो, सबमें वही प्रकाशमान है। इस दृतष्ट् से सब समान हैं। उस प्राण-शन्दक्त के अभाव में तुम केवल एक शव हो, काठ के लट्ठे की भााँतत । उसे रखा नहीं ाजाता। अतः सब प्रातणयों ामें उसी एक प्राण-तत्त्व की तवद्यमानता के कारण आन्तररक तादात्म्यता को जानते हुए अहंकार मत करो। तभी तुम भगवान् का भजन करने योग्य बनोगे। उसकी स्तुतत करोगे।"

ॐ ॐ ॐ

तजस प्रतक्रया में तुम भगवान् को भूलोगे, वह तुम्हारे दोनों ापैरों ामें लोहे की श्रंरखला बन जायेगी। सावधान ! बुन्दद्धमान् पुरुि सतका रहेगा और सावधानी से अपने कमों की गुणवत्ता का तनरीक्षण करेगा और यतद इसमें भगवान् नहीं ाहैं तो दूर-दूर, ऐसे कमा से दूर रहेगा।

तुम यहााँ एक तदव्य तनयतत का साक्षात्कार करने आये हो। बुन्दद्धमान् बनो। सतकाता से अपने कमा का तनरूपण करो और येन-केन-प्रकारेण संसार-रूपी भवसागर से पार हो जाओ।

ॐ ॐ ॐ

आध्यान्दत्मक जीवन यापन करने वाले आध्यान्दत्मक साधक का स्वधमा क्ा है? सब प्रकार की अधातमाकता को दूर रख कर तनतश्चत तदशा में यतद वह पग बढ़ाये, तो आत्म-साक्षात्कार की ओर बढ़ सकता है। सभी ऐन्दिक सुख और कामना-पूतता से सम्बन्दन्धत सवा कमा आपको भौततक जगत् की ओर आकरष्ट् करेंगे, सीधे रास्ते से दूर करेंगे और अधमा पर ही िलने की प्रेरणा देंगे। अतः ऐसे मनोरंजक कमों से दूर रहें।

इसका अतभप्राय यह कदातप नहीं ंतक तुम स्वातदष्ट् भोजन न करो; क्ोंतंक यह तो ऐसा मनोरंजन है जो अतनवाया स्वाभातवक तक्रया से सम्बद्ध है। तकनुतु एक सचे्चे साधक से थोडी-सी तपस्या की अपेक्षा की जाती है। उसे अनासक्त होना आवश्यक है। उसे अपनी इच्छाओं ंऔर इन्दिय-सुखों ंपर लगाम लगा कर संयत जीवन व्यतीत करना है। मन और इन्दियों ंको अनुशातसत करके ईश्ीैनुमुख करना है। संसार में रहते हुए एक अचे्छे साधक को स्वयं में कुछ अंश तक यततधमा तनभाना पडेगा। यततधमा का सार है-आत्म-संयम, मनोतनग्रह, वह नहीं ं करना जो मन करना िाहता है, प्रतुयुत् इससे वह काम कराना जो तुम िाहते हो।

ॐ ॐ ॐ

बहुत से लोग यह सिोते हैं तक आध्यान्दत्मक जीवन का अथा है-शरीर को कष्ट् देना, अनेक प्रकार के व्रत ले लेना, तपश्चयाा करना, अतत-संयम करना, आत्म-सन्ताप और शरीर को दण्ड देना। रामदास कहते हैं-"यह सब व्यथा है। आत्म-सन्ताप, तपस्या, व्रत आतद से शरीर को अनावश्यक रूप से क्ों ंकष्ट् देते हो। यह उपाय परमात्मा को तप्रय नहीं ंहै। तुम्हें तो केवल इतना करना है तक उस प्रभु की शरण में आओ, उसे प्रसन्न करो अपनी भन्दक्त और तनरन्तर जप-साधना से, तब बडी-से-बडी तवपदा भी सहज ही टल जायेगी। सुख सभी िाहते हैं, दु:ख कोई नहीं ंिाहता। मैं तुम्हें उत्करष्ट्, रामबाण उपाय बता रहा हूँ। तदव्य राम-नाम के जप से सब दु:ख समूल नष्ट् हो जायेंगे।"

ॐ ॐ ॐ

धन्य है वह पुरुि जो भौततक सुखों ंसे तवरक्त है। कामनाओं ंके तविय उसे तकतना ही घेरे रहें, वह जानता है तक वे सब व्यथा हैं, अतनत्य हैं, क्षणभंगुर हैं। वह जानता है तक वे आकिाक प्रतीत होते हैं और सुख-सुतवधा का आभास कराते हैं; तकनुतु प्राप्त कर लेने के पश्चात् वह सुखद कल्पना अदृश्य हो जाती है। जो हम समझते हैं, वे तविय हमारी उस आशा से कहीं ंअतधक परथक् प्रकरतत के होते हैं। ऐसा जान कर वह साधक आकिाक सांसाररक तवियों ंके मध्य तविरण करते हुए भी उनसे दूर रहता है।

ॐ ॐ ॐ

तवियोनुमुखता को समूल नष्ट् तकये तबना युगों ंपयान्त भी तुम मोक्ष-प्रान्दप्त का स्वप्न नहीं ंदेख सकते। सहस्रों ंजन्म ले लो, करोडों ंवि़ा व्यतीत हो जायें, िारों ंयुग पुन:-पुन: आयें-जायें; तकनुतु स्वप्न नहीं ंदेखना। वरतत्तयों ं को संयत तकये तबना तुम मुक्त नहीं ंहो सकते।

भगवन्नाम-जप और भगवद्भन्दक्त से ही मोक्ष सम्भव है। और तजस हृदय में वासनाओं ंका वास हो, उस हृदय में भगवान् अथवा उसके तदव्य नाम का उदय कदातप नहीं ंहो सकता। एक म्यान में दो तलवारें नहीं ंरह सकतीं।ं यतद तुम राम को िाहते हो, तो काम को छोड दो। राम और काम साथ-साथ नहीं ंरह सकते। काम में आसन्दक्त रखोगे, तो राम के तलए हृदय में स्थान नहीं ंरहेगा।

ॐ ॐ ॐ

मन इच्छा स्वरूप है। इच्छा के तबना मन का अन्दस्तत्व नहीं ंहै, तकनुतु इसी मन में दो रासे्त हैं। एक रास्ता तो उत्करष्ट्, अच्छा, पतवत्र, आनन्दप्रद और कल्याणप्रद है। दूसरा रास्ता अमंगलप्रद, अपतवत्र, बुरा और पतन की ओर ले जाने वाला है। बुन्दद्धमान् व्यन्दक्त मन के प्रतत समीक्षा की दृतष्ट् रखता है और अन्त:करण की न्दस्थतत जानने

का प्रयास करता है। कौन-सा रास्ता कामनाओं ंकी ओर आगे बढ़ रहा है? उसे प्रतीतत हो तक तदशा उतित है, तो वह मन को उत्सातहत करता है और यतद उसे यह आभास हो जाये तक भूलवश इच्छाओं ंने उसका रास्ता पररवततात कर तदया है जो कल्याणकारी और लाभप्रद नहीं ंहै, तो वह तत्काल अपनी वरतत्तयों ंको अन्तमुाखी करके उन्हें शुभ और भि की ओर ले जाता है।

ॐ ॐ ॐ

ऐसे अनुशासन का पालन करते हुए कहीं ंअहंभाव न बढ़ा लेना-"मैं ऐसा काया कर रहा हूँ जो अतधकांश लोग नहीं ंकर सकते। अतः मैं एक असाधारण व्यन्दक्त बन गया हूँ।" सदा नम्र रहो। नम्रता का अभ्यास करो। कमा में नम्र, वाणी से नम्र, व्यवहार में नम्र, इसी में तुम्हारा कल्याण है।

ॐ ॐ ॐ

अहंकार से भरे महान् योगी िांगदेव का जब अतभमान टूटा, तो वे दण्डवत् मुिा में भूतम पर तगर पडे और उच्च स्वर से िार सन्तों–ंतनवरतत्तनाथ, ज्ञानेिर, सोपानदेव और मुक्ताबाई से बोले-“मैं सोि रहा था तक मैं कुछ हूँ; परन्तु स्वीकार करता हूँ, मैं कुछ भी नहीं ंहूँ।" भ्राताश्री तनवरतत्तनाथ आगे बढ़ कर उन्हें भूतम से उठा कर कहते हैं-"उठो, उठो, ऐसा मत कहो तक तुम कुछ नहीं ंहो। तुम तो महान् योगी हो। इसमें कोई सन्देह नहीं।ं तकन्तु अपने योग से बढ़ कर अपनी अलौतकक शन्दक्तयों ंसे बढ़ कर, सवोपरर है तुम्हारा अहंभाव । तुम इस धरा की पररतध में ही सीतमत रह गये। तुम उस परम सत्ता तक नहीं ंपहुँि पाये जो पूणारूपेण कुतुि अतभमान के अभाव में ही प्राप्त है।" गुरुदेव गाते थे-"अपना अन्दस्तत्व खो कर ही मैं मोक्ष प्राप्त करूँगा। जीने के तलए मरना पडेगा। तदव्य जीवन व्यतीत करो।"

ॐ ॐ ॐ

घतनष्ठ तमत्र भी यतद भगवान् का भक्त नहीं ंहै, तो उस तमत्र से दूर रहो। ऐसे तमत्र हमारा जीवन व्यथा करते हैं। वे कहेंगे-“िलो, पाटी में िलें। िलो, तसनेमा देखने िलें। िलो, पवातों ंकी पद-यात्रा पर िलें।" सब-कुछ, बहुत अच्छा! तकन्तु आध्यान्दत्मक दृतष्ट् से अमूल्य जीवन का इतना हास! इस प्रकार यतद अमूल्य समय व्यथा गाँवा तदया, तो क्ा ऐसे व्यन्दक्त को तुम अपना तमत्र अथवा शुभ तिन्तक कहोगे, तजसके कारण तुम्हारा इतना समय व्यथा गया?

रामदास कहते हैं-"ऐसी तमत्रता से क्ा लाभ, जो भगवान् राम की स्मरतत न कराये ? मन में आपने भगवान् को धारण कर तलया है, तो ऐसे व्यन्दक्त से क्ा लाभ जो तुम्हारी उस धारणा को तोड कर तुम्हारे मन की न्दस्थरता और सन्तोि को छीन ले?

“ऐसे व्यन्दक्त से क्ा लाभ तजसकी तमत्रता में तुम्हारी अहंभावना अतभव्यक्त होती है?" हम सब अपनी साधना के िारा इस 'अह' को मारने का यथासम्भव प्रयास कर रहे हैं। जीवन के तलए मरतुयु का वरण करो। जीवन को तदव्य बनाओ। स्वाथावश कोई तमत्र यतद तुम्हारी प्रशंसा अथवा िाटुकाररता करे, तो उसकी तमत्रता तविवत् त्याग दो।

ॐ ॐ ॐ

मरत व्यन्दक्त के तलए शोक करना, बीती बात का शोक मनाना, तप्रय पदाथा के खो जाने पर शोक करना व्यथा है; क्ोंतंक यह सब तो अतनवाया है। तजसका कोई तनराकरण ही न हो, उसका शोक क्ा मनाना ? उसे तनतश्चत रूप से होना ही था और होनी टाली नहीं ंजा सकती। अश्रुधाराओं ंके सागर में ही िुबकी क्ों ंन लगा लो, भावी को तुम रोक नहीं ंसकते।

मनुष् इस सत्य को स्वीकार क्ों ंनहीं ंकरता। जब जैसा होना है वह तो होना ही है, ऐसा सिो कर वह शान्त और मौन क्ों ंनहीं ंहो जाता-"हााँ, यह तो होना ही है। इसके तलए मैं कुछ नहीं ंकर सकता।" बुन्दद्धमान्, तववेकशील बनना सीखो, शान्त रहना सीखो, पररन्दस्थतत का सामना करना सीखो।

ॐ ॐ ॐ

तकसी प्रकार की तिन्ता करना समय व्यथा गाँवाना है, क्ोंतंक आप तकतनी भी तिन्ता क्ों ंन कर लें, कमों के तनयमानुसार तलन्दखत प्रारब्ध तो आप तमटा नहीं ंसकते। तिन्ता करने की अपेक्षा अपना मन और हृदय सीधा परमात्मा में लगा दो।

वह परमात्मा ही सुतुतत और ध्यान करने योग्य एकमात्र तविय है। सरतष्ट् में रतित कोई भी ऐसा पदाथा नहीं ं है जो नमन करने योग्य हो। कुछ सिोना ही िाहते हो तो परमेिर के तविय में सोिो, तवियों ंके बारे में नहीं।ं प्यार करना िाहते हो तो परमेिर से प्यार करो, तवियों ंसे नहीं।ं उसी में पूणाता, शान्दन्त और सुख तनतहत है। बुन्दद्धमान् ऐसा ही करते हैं। इसी में तनतहत हैं तुम्हारे आत्यन्दन्तक सुख का आिासन और प्रत्याभूतत (गारंटी) - कामनाओं ंका तवराम-क्ोंतंक उस परमेिर में सवास्व पूणा हो जाता है, वह पूणा स्वरूप है। बुन्दद्धमान् बनो, जो करना है अभी करो। अभी समय है। उसका तिन्तन करो, उसका गुणगान करो, उसकी मतहमा गाओ, उसकी सुतुतत करो।

ॐ ॐ ॐ

आन्दत्मक रूप से एक सच्चे साधक को अन्ततनारीक्षण, आत्म-तवश्लेिण और तववेक िारा सांसाररकता से पूणारूपेण मुक्त होने में सफलता प्राप्त कर लेनी िातहए। रागिे–, ईष्ाा, अतभमान और स्वाथा भाव आतद दोि उसकी प्रकरतत में नहीं ंहोने िातहए। आलस्य, अकमाण्यता, िंिलता और संसार के प्रतत राग और अतधक हाँसना आतद दुगुाणों ंसे बिना िातहए। वाणी का संयम रखना िातहए। वािाल - हर समय बोलना, बोलना-ऐसा नहीं ंहोना िातहए।

इस बात के तलए िैतन्य रहना िातहए तक वाणी में भूल से भी अहंभाव की िेतना न लौट पाये। जब तक आप पूणा रूप से सावधान नहीं ंरहेंगे, वाणी आपको पथभ्रष्ट् कर सकती है। अतः साधक सदा नम्रता, सरलता और माधुया-भरी वाणी िारा ही प्रिार-प्रसार करता है।

ॐ ॐ ॐ

हे मेरे मन, बहुत हो िुका। इधर-उधर की बात करने में पहले ही तुम्हारा आधा जीवन व्यतीत हो िुका है। शान्त ! अब संकल्प करो तक आज के बाद, भगवान् राम, परमेिर-सवोच्च सत्य, अनन्य वास्ततवकता के अततररक्त कुछ और नहीं ंबोलोगे। जब भी बोलोगे, परम सत्य परमेिर के गुण गाओगे, अन्यथा मौन रहोगे। राम

के अततररक्त कुछ और बोलने से तो अच्छा है तुम एक शब्द भी उच्चारण न करो, मौन रहो। समय आ गया है। संकल्प कर लो। भगवान् के अततररक्त कुछ और नहीं ंबोलोगे।

ॐ ॐ ॐ

रामदास कहते हैं-"प्यारे तमत्र, भगवान् की ओर से तुम्हें जो-जो कताव्य करने को तमला है अथवा जो भूतमका तनभाने को तमली है, उसे तनष्काम भाव से पूणा करो। प्रश्न मत करो। यह तुम्हारे कल्याण के तलए है। इस संसार में, इस समाज में, इस क्षेत्र में तुम्हें कुछ तवशेि कताव्य करने हैं, तो जान लो तक यह सब प्रभु की ही इच्छा है। अत: इसे अपनी साधना और योग का अंग समझ कर करो। इसमें से अपने तलए कुछ मत माँगो। भगवान् िारा तनतदाष्ट् कताव्य का पालन करते िलो। ऐसा करने के साथ ही सबके साथ तादात्म्य भाव रखो। भेद-दृतष्ट् मत रखो। वे मुझसे परथक् हैं और मैं परथक् हूँ ऐसा भाव मत रखो, अन्यथा साधना में पीछे रह जाओगे। सब ओर परमेिर ही हैं। वे सवाज्ञ, सवाशन्दक्तमान् और सवाव्यापक हैं। अतः तुम दूसरों ंसे परथक् नहीं ंहो। वे तुमसे परथक् नहीं ंहैं। सब प्रातणयों ंमें आत्मैक् का भाव रखो (**आत्मित् सिवभूतेषु**) । इसी में तुम्हारी साधना का रहस्य तनतहत है।"

एवंतवध, परमात्मा िारा तनधाररत योजना के अनुरूप कताव्य पालन करते हुए, संसार में सबमें आत्मभाव रखते हुए उसी का गुण गाओ, उसी परमात्मा की सुतुतत करो, उपासना करो, उसे ही मतहमान्दन्वत करो। यही सुपथ है।

ॐ ॐ ॐ

धन्य है वह सेवक परमात्मा का, जो उसका काया करते-करते स्वयं को थका देता है। वह जो भी तिन्तन करता है, वह उसी परमात्मा का प्रयोजन है तजसे पूणा करने के तलए उसे धरती पर उस (प्रभु) ने भेजा है। उस प्रयोजन की पूतता के तलए वह जीवन यापन करता है।

ॐ ॐ ॐ

दूसरों ंकी सेवा के तलए, परोपकार के तलए, दूसरों ंको लाभ पहुँिाने का प्रयास करने में और दूसरों ंकी सहायता करने के प्रयास में स्वयं को थकाना तहतकर है। तकन्तु इस पर अतभमान नहीं ंकरना िातहए। इतना त्याग : शरणागतत और आस्था का एक जीवन उत्करष्ट्, अमोघ, श्रेष्ठ जीवन यापन करते हुए भी तुम्हें नम्रता का भाव रखते हुए झुक कर रहना िातहए। दूसरों ंके प्रतत सेवक का भाव बनाये रखो मैं तुम्हारे से तुच्छ हूँ।

मन्दन्दर में प्रयोग होने वाला िन्दन की लकडी का एक टुकडा तनत्य पत्थर से रगडे जाने पर भी सवात्र सुगन्दन्ध फैलाता है। िन्दन का वह टुकडा दूसरों ंको प्रसन्नता देने के तलए छोटे-से-छोटा होता जाता है और एक तदन अदृश्य भी हो जाता है। कपूर भी भगवान् को मतहमान्दन्वत करने के तलए पूणा रूप से समाप्त होने अथवा जल जाने पयान्त जलता रहता है। अपने अन्दस्तत्व की पररसमान्दप्त की उसे कदातप तिन्ता नहीं;ं क्ोंतक उसने एक उदात्त काया तकया है। परम देव की पूजा में उसने सहयोग तदया है।

ॐ ॐ ॐ

रामदास कहते हैं-"हे मेरे मन, अब आओ, अतधक देर न करो, प्रत्येक सम्भव प्रयास से श्रीराम को अपना, सवाथा अपना बना लो। अनुभव करो तक इस संसार में प्रभु राम के तसवा तुम्हारा अपना कोई नहीं ंहै।

केवल वही तुम्हारा अपना है और तुम सवाथा उसी के हो। 'हे भगवन्, मैं तुम्हारा हूँ, तुम मेरे हो, मेरा और कुछ नहीं ंहै। केवल तुम्हीं ंहो तजसे मैं अपना कह सकता हूँ' ऐसा करोगे तो तुम्हारा अनन्य कल्याण होगा। सब सुख-शान्दन्त तुम्हारी होगी। तुम्हारा जीवन सफल होगा। 'तीनों ंलोक जानते हैं तक जो व्यन्दक्त मेरे पास यह कहते हुए आता है तक 'मैं तुम्हारा हूँ', मैं उन्हें पूणा सुरक्षा प्रदान करता हूँ। उन्हें कोई अभाव नहीं ंरहेगा।' उसने यह व्रत ले तलया है। अतः वह विन ही तुम्हारी गारण्टी है, आशा है, तुम्हारे कल्याण का समूपूणा आिासन और पूणा सुरक्षा है।"

ॐ ॐ ॐ

"हे मन, भगवान् राम के िरणों ंमें सदा लगे रहना। वेद, शास्त्र और पुराणों ंने इन िरण-कमलों ंकी मतहमा गायी है, तजन िरणों ंमें रह कर प्राणी तत्काल सदा-सदा के तलए आत्म-सनुतुतष्ट् प्राप्त कर लेता है और समग्र िंिलता दूर हो जाती है। न्दस्थर सुख-शान्दन्त और आनन्द-प्रान्दप्त का अन्य कोई स्रोत नहीं ंहै।

"अध्यवसाय (दृढ़प्रततज्ञा) और तववेक से लगे रहो। इस दृढ़तविास के समक्ष कोई तमथ्या भाव आये, तो उसे बदल िालो। कौन-सा भाव बाधा बन कर समक्ष आता है ? भाव तो यही है तक शरीर को सब प्रकार की सुख-सुतवधा प्रदान करती हैं- मेरे पास सुख के सभी साधन हैं, उन्हें प्राप्त करूँ, भोग करूँ, तभी सुख सम्भव है।' यह तमथ्या भाव अथवा अज्ञान तनरन्तर इसी तिन्तन का पररणाम है तक 'मैं यह शरीर हूँ, यह मेरे उपभोग का साधन है। यतद इस शरीर के िारा मैं सुख नहीं ंप्राप्त करता, तो वसुतुतः जीवन का आनन्द मैं प्राप्त ही नहीं ंकर सकता।' अरे मन, यह भाव त्याग दो तक तुम यह शरीर हो। भगवान् राम के िरण-कमल में सदा आनन्द प्राप्त करो।

"अरे मन, मैं तुम्हें बता रहा हूँ तक इतस्ततः भटकने से, मारा-मारा तफरने से तुम्हारे हाथ कुछ नहीं ं लगेगा। इतना अवश्य है स्वयं को पररश्रान्त करने में सफल हो जाओगे; तकनुतु तजस सुख की खोज में इधर-उधर भटक रहे हो, वह तुम्हें नहीं ंतमलेगा। तुम तवपरीत तदशा में जा रहे हो। श्रीराम के िरणारतवन्द में वास करने में ही सुख है। केवल वही आनन्द-स्रोत है।"

ॐ ॐ ॐ

दृश्य जगत् में अनेकता के भ्रम में न पडने वाला व्यन्दक्त धन्य है। उसके अनुसार संसार में कोतट-कोतट परथक् परथक् पदाथों के होते हुए भी उनमें एकत्व तनतहत है। समस्त दृश्य जगत् में केवल एक ही सावाभौतमक सत्ता अन्ततनातहत है। तवतवध प्रतीतत में भी एकमात्र परमात्मा के दशान उसका लक्ष्य है।

ॐ ॐ ॐ

सचे्चे साधक का समय शाित सत्य अकाल पुरुि परमात्मा के तिन्तन में व्यतीत होता है। यही उसका व्यवसाय है। व्यथा के तका और वाद-तववाद में समय नष्ट् करने की अपेक्षा वह सत्य को ही परावततात करने में संलि रहता है। दूसरों ंके तहत के तलए अपने अनुभव उन्हें बताता है। 'अन्य लोग भी मेरी भाँतत लाभ उठा सकें', यह उसकी प्रवरतत्त रहती है, स्वभाव बन जाता है।

ॐ ॐ ॐ

रामदास कहते हैं-"तकशोरावस्था में मैंने गरह-त्याग कर तदया। जीवन-भर आध्यान्दत्मक मूल्यों ंपर अतिग रहा। अतः आध्यान्दत्मक जीवन के प्रतत कुछ आदेश करने का मुझे अतधकार है। अत:, आओ, बताता हूँ। कमा, दान-पुण्य, तीथा-यात्रा, शुभ कमा, धमा, भोग-त्याग यह सब-कुछ नहीं।ं कहना न होगा-यह तो बहुत छोटी बातें हैं। तदव्य नाम के गुणगान में सुदृढ़ श्रद्धा ही सवास्व है। तदव्य नाम संकीतान का यतद कठोरता से अभ्यास करो, तो केवल वहीं ंतुम्हें जीवन के सवोच्च लक्ष्य की प्रान्दप्त कराने में सक्षम है, पयााप्त है।"

ॐ ॐ ॐ

तनष्काम भाव से सतत राम-नाम का जप करते रहो। तकसी कामना से करोगे, तो केवल वही पूणा होगी। तबना तकसी कामना के करोगे, तो सब-कुछ प्राप्त कर लोगे। पूरा अक्षय पात्र तुम्हें प्राप्त होगा। तुम पर सवा कमनीय पदाथा और तिर सुख की विाा होगी। सतत तनष्काम भाव से राम-नाम के जप के पररणामस्वरूप तुम्हारा जीवन कष्टप्रद कतठनाइयों,ं दु:खों ंऔर समस्याओं ंसे मुक्त हो जायेगा। सहज रूप से सब काया होते जायेंगे। समस्याएँ स्वयं ही सुलझती जायेंगी। कतठनाइयाँ, सामना करने की पररन्दस्थतत आने से पूवा ही दूर हो जायेंगी।

ॐ ॐ ॐ

उस राम-नाम का तिन्तन सदा करते रहो तजसका नाम महानतम दिो का भी तनराकरण कर देता है। तकतना ही बडा दिो तुम्हारे भीतर क्ों ंन हो, व्याकुल नहीं ंहोना। यह दिो तुम्हारे मन पर बोझ हो सकता है। सम्भव है तुम इसके साथ (इसे दूर करने के तलए) संघिा कर रहे हो; पर पररणाम कुछ नहीं ंतमलता। घबराओ मत! उसका तिन्तन करोगे, तो अपराजेय दिो पर तुम सहज रूप से तवजय पा लोगे। उदीयमान सूया के समक्ष धुन्ध की भााँतत इसका लोप हो जायेगा।

उस राम का स्मरण करो तजससे परम पद की प्रान्दप्त होती है। तदव्य राम-नाम संकीतान िारा मोक्ष पाना और आनन्दमयी न्दस्थतत प्राप्त करने जैसा जब सुलभ उपाय है, तो कतठन दाशातनक पुस्तकों ंके वाद-तववाद में क्ों ंपडते हो? ग्रिों ंमें आपको क्ा तमलता है? पेपर! उत्करष्ट्तर जीवन का सार, आध्यान्दत्मक जीवन का सार पुस्तकों ंमें नहीं ंहै, प्रत्युत् तुम क्ा हो, क्ा कर रहे हो और कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हो, इसमें तनतहत है।

ॐ ॐ ॐ

भगवान् के नाम में श्रद्धा न रखने वाला व्यन्दक्त शोिनीय है, दुष्ट् है। इस भौततक जगत् के तनरपेक्ष जीवन के प्रतत ही सदा वह उत्सुक और तिन्दन्तत रहता है। यह सब पररहाया है; तकन्तु यह अभागा व्यन्दक्त नहीं ंजानता तक भगवन्नाम सब प्रकार की सुरक्षा देने वाला है। अनावश्यक रूप से वह स्वयं को अनेक यन्त्रणाओं ंमें फाँसा लेता है; क्ोंतक उसे भगवान् के तदव्य नाम में तविास ही नहीं ंहै। मुन्दक्तदाता जब तुम्हारे ही पक्ष में है, तो व्यथा में इधर-उधर अपना सर क्ों ंपटकते हो?

ॐ ॐ ॐ

वास्तव में तवश्राम तो वही पा सकता है तजसकी वागेन्द्रिय (तजह्वा) सदा राम-नाम रटती रहती है। ऐसा व्यन्दक्त सदा तवश्राम, सुख और आनन्द की अवस्था का अनुभव करता है- "यह मेरा तवश्राम-स्थल है। तजसे प्राप्त करने की मेरी तीव्र आकांक्षा थी, उसे मैंने प्राप्त कर तलया है। अन्य स्थान तो शोरगुल वाले, थकाने वाले हैं जहााँ तवश्रान्दन्त नहीं ंहै। तवश्राम तो यहीं ंहै।" एक बार इस बात का ज्ञान हो जाने पर वह राम-नाम संकीतान का सहारा लेता है जहााँ वह सदा तनतश्चन्त, शान्त, सुखी, उल्लतसत और आनन्दमयी न्दस्थतत में रहता है।

वह अिय सत्ता, तजसकी मानव-समूह अल्लाह, खुदा, आहुमाज्दा, ताओ के रूप में, परात्पर के रूप में पूजा करता है, तजस सत्ता को नान्दस्तक लोग अस्वीकार करते हैं,
एक महासागर है तजसमें सभी धातमाक धाराएँ प्रवातहत होती हैं। उसकी ही मतहमा इंजील, कुरान, ग्रिसाहब और वेदों ंमें गायी गयी है। प्राथाना-भवनों, ं तगरजाघरों, ं मसतजदों ं तथा मन्दन्दरों ं में उसकी ही पूजा होती है। तकनुतु, उसका सबसे तवशाल मन्दन्दर
तो मानव का हृदय है। वह सबमें व्याप्त, प्रतवष्ट् तथा अन्तव्यााप्त है। वही हमारी सत्ता का मूल तत्त्व है।

- स्वामी तिदानन्द

५.संन्यास का वास्ततवक स्वरूप

आध्यान्दत्मक जीवन में जब प्रारन्दम्भक उत्साह और प्रत्याशा क्षीण होने लगती है और ऐसा प्रतीत होता है मानो साधक मध्य-राह में आ कर कहीं ़अटक गये हैं, न इधर के न उधर के, कोई प्रगतत नहीं ़कर रहे, तो मैं सदा उन्ें परामशा देता तक वे परथक् कोण से पुनः इस पर दृतष्टपात करें; क्योंतंक जो दृतष्टकोण उन साधकों ़ने अपनाया, वह सही नहीं ़था। मैंने कहा- "आत्म-साक्षात्कार हेतु हम यहााँ आये हैं, अतः यह एक अनन्य लक्ष्य है जो तुम्हें प्राप्त करना है। अत: इसी तदशा में आगे बढ़ते हुए, ऊपर उठते हुए गन्तव्य को पाना है।

“सांसाररक व्यन्दक्तयों ़को आकतित करने हेतु आरम्भ में यह संकेत तदया जाता है। वास्ततवकता तो यह है तक हमें जीवन तमला है भगवान् की भन्दक्त के तलए, उसके स्मरण के तलए, उसकी आराधना के तलए, उसे मतहमान्दन्वत करने के तलए और सबको यह घोिणा करने के तलए तक सब महानता तो केवल उस सवाशन्दक्तमान् प्रभ की है, मतहमा उसी की है। जीवन का और कोई अतभप्राय नहीं ़है। प्रभु का गुणगान करते हुए, सतत उसका तिन्तन करते हुए, नाम-स्मरण करते हुए, प्राथाना करते हुए, उसकी तदव्यता और समूपूणाता के साक्षी बन कर तुम अपना जीवन यापन करते हो, यही अपने-आपमें एक जीवन की पूणाता है। परमात्मा के यश की सुगन्ध सब ओर प्रसाररत करके तुम अपना जीवन साथाक कर रहे हो। उस अलौतकक सत्ता का गुणगान करते-करते सतत उसी में लीन होना ही जीवन का अथा है।

"अप्राप्त वसुतु को प्राप्त करने का कोई प्रश्न ही नहीं ़उठता। यतद तुम भगवान् के तलए जी रहे हो और तनरन्तर उसकी मतहमा, महानता, सवाशन्दक्तमत्ता के साक्षी हो और जीवन-भर यही करते हो, तो तुम्हारा जीवन व्यथा नहीं ़गया। तुमने एक योग्य, उत्करष्ट् जीवन तजया है। अतभनन्दन तुम्हारा ! यह एक सत्य है। परमात्मा का तुम्हें यहााँ भेजने का प्रयोजन तुमने पूणा तकया अथाात् जीवन-भर तुमने साक्षी भाव से उसकी कीतता का ध्वज ऊाँिा फहराया।"

> जीवन का प्रकाश 'गुरु-उपदेश' है। जीवनकीशन्दक्त 'भगवन्नाम' है। जीवन में सफलता का रहस्य 'भगवद्-तविास' है। जीवन काआधार 'धमा' है। जीवन की सम्पतत्त 'सद्गुण' है। सवोत्करष्ट् तनतध 'भगवद्-भन्दक्त' है। शान्दन्ततथा परमानन्द की कुंजी 'ध्यान' है। परम करताथाता का जीवन 'तदव्य जीवन' है। जोकुछकहा गया है, उस पर तविार करें, उसके काया को भली-भााँतत समझें, अपने दैतनकजीवन में उनका अनुसरण करें तथा इस भााँतत सौभाग्यशाली बनें!
>
> -स्वामी तिदानन्द

६. गुरुदेव : एक आदशा-संन्यास में

श्रिनीय, वन्दनीय, सवातप्रय, परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी तशवानन्द जी महाराज को स्नेतहल प्रणाम ! परब्रह्म में प्रततततष्ठत एक महान् तत्त्वज्ञ स्वामी जी महाराज ने इस अवस्था को सहज ही प्राप्त नहीं ़कर तलया। कठोर संघि, उग्र तपश्चयाा, महान् प्रायतश्चत्त, अपूवा योग-साधना, गहन ध्यान, अनन्य भन्दक्त और परमात्मा के तलए

हातदाक समपाण भाव से उन्ोंनें यह न्दस्थतत प्राप्त की। "मुझे यथाशन्दक्त प्रयास करना है; तकनुतु लक्ष्य प्रान्दप्त में पररणाम पूणातया सवाज्ञ ईिर की तदव्य इच्छा पर तनभार है। अतः आत्यन्दन्तक तवश्ेलिण में मेरे प्रयास शून्यवत् हैं। मेरी उपलन्दब्धयाँ शत-प्रततशत परम तपता परमेिर की दैवी इच्छा के अधीन हैं।"

प्रगाढ़ एकाग्रता (गम्भीरता) और घोर आत्मोत्कािा के वे अद्भुत प्रततरूप थे और इस सत्य का भी उन्ें स्पष्ट् संज्ञान था तक सवास्व प्रभु के हाथ में है। मानवीय प्रयास सफल नहीं ंहोते यतद दैवी इच्छा प्रबल न हो तो, अन्ततः जय उसी की है। व्यन्दक्तगत आभ्यन्तर संन्दस्थतत के रूप में उन्ोंनें इस भाव को गुप्त रखा; क्ोंतक यतद वे कहते-"सब-कुछ भगवान् के हाथ में है," तो हम जैसे अपररपक्व लोग आलसी हो जाते जो सदा कोई-न-कोई सरल राह ढूाँढ़ते-"नहीं,ं नहीं,ं वही सब-कुछ करेगा, हमें कुछ करने की आवश्यकता नहीं ंहै।"

क्ोंतक सवोच्च आध्यान्दत्मक तथ्यों ंके सूक्ष्मतर आन्तरिक सत्य को समझना सरल नहीं ंहै। अतः वे सदा कहा करते थे-"नहीं,ं नहीं,ं नहीं,ं आत्म-प्रयास। तुम्हें सदा संघिा करना िातहए। तबना संघिा अथवा प्रयास के कुछ भी प्राप्त नहीं ंहोगा", अथाात् आत्यन्दन्तक सत्य को पूणा रूप से जानने के तलए कमा तो करना ही होगा।

ॐ ॐ ॐ

गुरुदेव श्री स्वामी तशवानन्द जी का एक लक्ष्य था-लौतकक कल्याण! अज्ञान की तनिा से सबको उठ जाना िातहए। सब जागें और ब्रह्मज्ञान की प्रान्दप्त का आनन्द लें; क्ोंतक अज्ञान की प्रगाढ़ तनिा अनेक दुःखों ंका मूल कारण है।

गुरुदेव स्वामी तशवानन्द जी एक महान् कमायोगी थे। हमारे समय में वे मानवता के कल्याण में रत अनन्य, स्वाथारतहत तनष्काम कायाकतााओं ंमें एक थे। उन्ोंनें अद्भुत, अनुपम, अपूवा काया तकया। उन्ोंनें तीन सौ पुस्तकें तलखीं।ं तवशाल आश्रम बनवाया। उन्ोंनें असंख्य तविारगोतष्ठयाँ करवायीं ंऔर तवि-भर में तथा समस्त भारत में तदव्य जीवन संघ की शाखाएँ खुलवायीं।ं हमें उनकी सतक्रयता देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पुनरतप, हमें इतना भी ज्ञात है तक वे कीतान-सम्राट् थे। भगवन्नाम संकीतान के साथ नरत्य करते हुए गाने में तवशेि आनन्द लेते थे। 'जपयोग' पुस्तक भी उनके िारा तलखी गयी। वे एक महान् भक्त भी थे। सब काम करते हुए वे उस परम देव की स्तुतत करते रहते। उनका जीवन, उनकी गततततवतधयाँ, कमा, परमात्मा में लगन तथा सूक्ष्मतम काया भी केवल मात्र परमेिर की आराधना से ओत-प्रोत था। उनके अनुसार जीवन भी एक महान् पूजा है। दशान, श्रवण, सम्भािण, िसन, प्राणन, स्पशान, आस्वादन, ततष्ठन, स्वप्न और गमन-सब उस प्रभु की मतहमा-मन्दण्डत आराधना के रूप में उसी को समतपात था।

हमारे ज्ञान में आने से पूवा वे स्वगााश्रम में घोर साधना और एकान्तवास का जीवन यापन करते रहे। महान् ध्यानयोगी, मौन अन्तमुाखी, सवादा प्रभु-तिन्तन में लीन, वे सदा अपने कुटीर के िार बन्द करके ध्यान, केवल ध्यान में मस्त रहते थे। उन्ोंनें एक पुस्तक तलखी - 'एकाग्रता और ध्यान'। 'ध्यानयोग' पुस्तक भी उन्ीं ंके िारा रतित है। वे कहते तक ज्ञानोद्दीपन के तलए अथवा ज्ञान-प्रकाश की प्रान्दप्त के तलए ध्यान ही एकमात्र साधन है। अपने सभी सहयोतगयों ंको उन्ोंनें ध्यान हेतु प्रेररत तकया। महति पतंजतल के योग-सूत्रों ंमें वतणात ध्यानयोग के सूत्रों ंकी व्याख्या, टीका और अनुवाद को उन्ोंनें पुस्तक का स्वरूप तदया। वे रहस्यमय ध्यानयोगी थे। इसी के साथ, जगद्गुरु आतद शंकरािाया की परम्परा के वे कैवल्य अिैत वेदान्दन्तन् भी थे। वेदान्ती आश्रमों ंमें, िाहे वे ऋतिकेश में हों ंअथवा हररिार में, सभी लोग उन्ें वेदान्दन्तक स्वरूप मानते थे। वे सब-कुछ होते हुए भी मूलतः योगी थे, तजन्ोंनें तदव्य सत्ता से एकत्व प्राप्त तकया और घोिणा की तक सबके जीवन का अन्दन्तम लक्ष्य यही है। उस एकत्व की प्रान्दप्त के उन्ोंनें सब साधन और पथ प्रशस्त तकये।

ॐ ॐ ॐ

अन्य महत्त्वपूणा उपदेशों ंके साथ-साथ गुरुदेव ने हमें सब धमों की मौतलक एकता का स्वरूप बताया। तनत्यकमा, संस्कारतवधा और पूजा-स्थल का बाह्य तनमााणतशल्प तथा पुरोतहतों ंकी तवतभन्न धमों में तभन्न-तभन्न वेशभूिा का ज्ञान भी गुरुदेव ने कराया। ये सब धमा परथक् होते हुए भी मौतलक एकता को प्रभातवत नहीं ंकरते। परमेिर की सवाव्यापकता, सवाशन्दक्तमत्ता और सवाज्ञता तथा उस अलौतकक सत्ता की पूणाता का सभी धमा एक स्वर से गान करते हैं।

ॐ ॐ ॐ

कुटीर से कायाालय में आने पर गुरुदेव स्वयं को तवतवध प्रकार के तक्रया-कलापों ंमें व्यस्त रखते थे। वे आगन्तुकों ंसे तमलते, उनका मनोरंजन करते, मुक्तहस्त आध्यान्दत्मक सातहत्य तवतररत करते, उनकी समस्याओं ं को ध्यानपूवाक, धैयापूवाक सुनते, समस्याएँ सुलझाते और यतद आगन्तुक तविाद में होते, तो उन्ें सान्त्वना देते थे। ये सब काया वे एक तपतामह की भाँतत करते। पुनरतप, हम देखते हैं तक वे सतत वैतिक सत्ता में लीन रहते। वे अिल, अनवरत रूप से परम देव में वास करते। वे िैत-पररमाण के समकालीन आश्चया थे।

इसका महत्त्व यह है तक उन्ोंने यह प्रमातणत कर तदया तक आज के कतलयुग में भी, जहाँ मानवता पतन की ओर अग्रसर हो रही है, ऐसा सम्भव है। १९५० में अपने अपूवा प्रेरक, राष्ट्र को स्तन्दम्भत कर देने वाले आध्यान्दत्मक भारत-भ्रमण के समय भी हमने अवलोकन तकया तक व्यस्त कायाकलापों ंके होते हुए भी वे सदा वैतिक सत्ता परम ब्रह्म में खोये रहते थे।

स्वामी तशवानन्द जी का बाह्य व्यन्दक्तत्व तनरपेक्ष पररतध में तक्रयारत था। आन्तररक सत्य, तजसने ब्रौक् की अनुभूतत का आनन्द प्राप्त कर तलया था और ब्रह्म-िेतना के साथ एकाकार हो गया था। केवल वही सत्य है, सभी अतभव्यन्दक्तयाँ तमथ्या हैं-इस तथ्य के प्रतत उनकी आभ्यन्तर न्दस्थतत कभी प्रततकूल नहीं ंहुई और उस पर बाह्य पररवेश का कोई प्रभाव न पडा। अतः उनकी िेतना और उनका व्यन्दक्तत्व आधुतनक युग में वास्तव में ही एक िमत्कार, आश्चया थे।

ॐ ॐ ॐ

स्वामी तशवानन्द जी का परम तपता परमात्मा में अटूट तविास दशानीय था। पूणा, सम्पूणा। वे हमारे समक्ष एक साक्षात् दृष्टान्त के रूप में थे। उनकी अहेतुकी करपा हम सब पर बनी रहे !